गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की - 247667 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल : 09760111555
Website : www.astrotantra4u.com

इस्लामिक मान्यता एवं रत्न चयन

मुस्लिम समाज में भी रत्न धारण करने की परिपाटी प्रचलित है। परन्तु रत्न का चयन वहॉ राशि अथवा नक्षत्र के आधार पर न करके ग्रह तथा उससे सम्बन्धित रंग के आधार पर किया जाता है। मुस्लिम समाज में ज्योतिष अर्थात् नजूम को एकमत से स्वीकारा गया है तथा धरती और आकाश का सम्बन्ध ग्रहों पर ही आश्रित होना माना गया है। इसलिए वह एक ऐसे ग्रह के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं जो कि व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन निर्धारित करता है। रुलिंग प्लेनेट की तरह यह ग्रह भी जीवन पर नियन्त्रण रखता है। इस ग्रह को व्यक्ति की जन्म तिथि की सहायता से निकाला जाता है। यह विधि जितनी सरल है उतनी ही मुस्लिम समाज में प्रचलित और सफल भी है। दर्जनों मुस्लिम रत्न विक्रेताओं से मेरे सम्बंध रहे हैं। मैंने अपनी खोज में पाया कि अधिकांश नजूमी रत्न चयन में एकमतता रखते हैं। वहॉ विविधता कम है। जहॉ विविधता कम होती है वहॉ एक तो प्रक्रिया सरल हो जाती है दूसरे वहॉ भ्रम की सम्भावना भी न्यून बन जाती है। किसी ने एकमत से कोई एक बात स्वीकार कर ली तो वह सत्य है ही, उसका अस्तित्व अवश्य

होगा। ऐसा ही सत्य मुझे इस्लामिक रत्न चयन पद्धति में लगा। जब पाठक इस विधि से रत्न चयन करके लोगों के अनुभव एकत्रित करेंगे तब मेरे वक्तव्य की स्वतः पुष्टि हो जाएगी।

अपनी जन्म की तिथि, माह तथा वर्ष के अन्तिम दो अंक जोड़ लें। इस गणना के लिए शताब्दी को छोड़ दिया जाता है। माना आपकी जन्मतिथि 08-11-1980 है। इनका कुल योग हुआ - 8+1+1+8=18

कुल योग को स्थिर संख्या 9 से भाग दें - 18÷9= 0 (शेष)

एक अन्य उदाहरण देखें। माना किसी व्यक्ति का जन्म 27-11-1973 को हुआ है। यहॉ कुछ योग होगा - 2+7+1+1+7+3=21

योग को 9 से भाग दिया। 21÷9=3(शेष)

जन्मतिथि गणना से निकले शेष से व्यक्ति का भाग्यशाली ग्रह निकलता है। निम्न सारिणी से स्पष्ट होता है कि शून्य शेष बचे व्यक्ति का भाग्यशाली ग्रह मंगल है जिसको उर्दू में ज़ैनव कहते हैं। मुस्लिम सिद्धान्त के अनुसार यहॉ सुनहरे रंग के रत्न को धारण करना बताया गया है। इसी प्रकार शेष 3 वाले व्यक्ति का भाग्यशाली ग्रह मंगल अर्थात मर्रीख है। इस ग्रह के लिए काले रंग के रत्न को धारण करने पर बल दिया गया है। मुस्लिम पद्धति में दरअसल किसी रत्न विशेष का चयन न करके रंग का चयन किया जाता है। संभवतः इसीलिए वहॉ रत्नों के लिए विभिन्न रंगों के अकीक पत्थर प्रयोग में लाए जाते हैं। यदि ग्रह के अनुकूल ठीक-ठीक रत्न का चयन कर लिया जाए तो रासायनिक घोल विशेष द्वारा निर्मित कृत्रिम रुप से विभिन्न रंगों के रत्न भी प्रभावशाली सिद्ध होते हैं।

अकीक वर्ग में बहुत से रत्न आते हैं, यह ठीक है। परन्तु यहॉ स्पष्ट कर दूँ कि जो रत्न हमारी समझ के बाहर हों, वह अकीक वर्ग के ही हों, यह आवश्यक नहीं।

क्रिस्टल एक सामान्य सा नाम है। क्वार्टज एक अन्य ऐसा ही नाम है। इनके अन्तर्गत अनेक रत्न आते हैं जैसे सुलेमानी, जज़ेमानी, कैल्सीडोनी, कार्नीलियन, रॉक क्रिस्टल, गुलाबी क्वार्ट्ज, ऐमिथिस्टीय क्वार्ट्ज, कैट्स आई क्वार्ट्ज, जैस्पर, ऐवेन्टुराइन क्वार्ट्ज़ आदि। सामान्य भाषा में यह अकीक वर्ग के ही हैं। इसलिए विभिन्न नामों से भ्रम होना स्वाभाविक है। विषय के जिज्ञासु एवं बौद्धिक पाठय विस्तृत एवं परिपाटी से सर्वथा अलग-थलग ज्ञान के लिए मेरी पुस्तक ***'स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न'*** भी पढ़ सकते हैं।

व्यक्ति की अपनी-अपनी सुविधा तथा सामर्थ्य है, वह उस रंग से संबन्धित मूल्यवान रत्न भी धारण कर सकता है।

शेष अंक	ग्रह	उर्दू नाम
1	सूर्य	शम्स
2	चन्द्र	क़मर
3	गुरु	मर्रीख़
4	राहु	अतारु
5	बुध	मुश्तरी
6	शुक्र	जोहरा
7	केतु	ज़ुहल
8	शनि	रास
9	मंगल	ज़ैनब

क्रम	ग्रह	किस रंग का रत्न-उपरत्न
1	शम्स	पीत वर्ण अथवा सुनहरा

2	क़मर	हरित अथवा नील वर्ण
3	मुश्तरी	गुलाबी
4	रास	हल्का श्याम वर्ण
5	अतारु	हरित अथवा पीतवर्ण
6	जोहरा	नील वर्ण
7	ज़ैनब	सुनैहरा
8	जुहल	श्याम वर्ण
9	मर्रीख़	श्याम वर्ण

गोपाल राजू (वैज्ञानिक)

(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.

ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र

30, सिविल लाईन्स

रूड़की 247667 (उ.ख.)

फोन : (01332) 274370

मोः 09760111555

website : www.astrotantra4u.com

E-mail:gopalraju12@yahoo.com

इस्लामिक पद्यति के अनुसार रत्न चयन

इस्लामिक जीवन में रत्नों का उपयोग